शोध आलेख सार— वैज्ञानिक, उदारीकरण, नारी शक्तिकरण तथा पर्यावरण आदि के क्षेत्रों में संस्कृत साहित्य के योगदान की ओर समालोचकों का ध्यान आकृष्ट हुआ है। यजुर्वेद में यजुर विश्व भववैज्ञानिकों का उद्देश्य किया गया है। ऋग्वेद में संगवध्वम् संवदध्वम् की भावना व्यक्त की गई है। यजुर्वेद में पुरुष, आकाश, आधि, वनस्पति आदि की शान्ति एवं समुद्र की कामना की गयी है। जीवन को दीघा, स्वास्थ्य एवं संवक्षण होने की कामना अभिव्यक्त की गई है।

मुख्य शब्द— वैज्ञानिक, उदारीकरण, नारी, शक्तिकरण, पर्यावरण, साहित्य।

इक्कीसवीं शताब्दी में संस्कृत पत्र-पत्रिकाओं की सामान्य प्रकृतियाँ

डा.विभाष चन्द्र
प्रशिक्षित स्नातक शिष्टक
केन्द्रीय विद्यालय क्रम सं.2, गया

इक्कीसवीं सदी का आर्थिक स्वश्व के शिक्षार्थी पर अनेक नवन समस्याओं एवं विषयों के आगमन के साथ होता है। इस समय अनेक समाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, शैक्षिक, सांस्कृतिक एवं वैज्ञानिक विषयों पर नवन हुंग से चित्तन-मनन आर्थिक हुआ। वैज्ञानिक, बाजारीकरण, उदारीकरण, पुरुषों के अस्तित्व पर संकट, पर्यावरण, निरस्तरता-निवारण आदि विषयों पर विज्ञान का ध्यान आकृष्ट हुआ है। कहा जाता है कि आज दुनिया छोटी होती जा रही है और समाज बड़ा होता जा रहा है। समस्या विश्व एक नीड बन गया है, जिसमें विभिन्न धर्मों, समुद्रों, देशों तथा क्षेत्रों के लोग मिलकर उपर्युक्त समस्याओं पर विचार-विरूपक करने को तत्पर हो रहे हैं। पुरुष एवं लिंगों के कार्य-क्षेत्रों का भेद मिट रहा है। न केवल शिक्षा के क्षेत्र में अपितू सामाजिक, सेवा, विभिन्न विकास तथा अन्तरराष्ट्रीय यात्राओं में भी महिलाओं की भागीदारी पर बढ़ रही है। अब शायद यह काम की भी जिज्ञासा बढ़-बढ़ कर हिस्सा नहीं ले रही हो। नारी शक्तिकरण पर बहुत विस्तार से विषयित हो रहा है।

इस वैज्ञानिक, उदारीकरण, नारी शक्तिकरण तथा पर्यावरण आदि के क्षेत्रों में संस्कृत साहित्य के योगदान की ओर समालोचकों का ध्यान आकृष्ट हुआ है। यजुर्वेद में यजुर विश्व भववैज्ञानिकों का उद्देश्य किया गया है। ऋग्वेद में संगवध्वम् संवदध्वम् की भावना व्यक्त की गई है। यजुर्वेद में पुरुष, आकाश, आधि, वनस्पति आदि की शान्ति एवं समुद्र की कामना की गयी है। जीवन को दीघा, स्वास्थ्य एवं संवक्षण होने की कामना अभिव्यक्त की गई है। वहाँ ऋग्वेद में केवल अपने अकेले कल्याण की कामना (एकवचन) में करते हैं, अपितू समस्त लोकों के सुख एवं समुद्र की कामना (बहुवचन) में करते हैं।
संसकृत में भाषा के दिनों एवं आयोजनों का प्रभाव तत्कालीन साहित्य पर निर्धारित रूप से पड़ता है। आत: कवियों, लेखकों एवं आलोचकों की लेखनी से तत्कालीन स्थितियों का वर्णन स्वभाविक रूप से निष्ठुरता रहता है। प्राचीन काल में संस्कृत के कवियों में अपना परिचय देने की परम्परा नहीं थी। आत: कालीय, भवभूति आदि ने अपने बारे में कहीं कुछ नहीं लिखा है, फिर भी समालोचक उनके स्थिरताको प्रभावण अत: प्रमाण के कारण करते हैं, अर्थात् उन्होंने जिन राजाओं या अन्य कवियों या घटनाओं का कहीं कुछ सकेत अपने प्राप्त स में दिया है वहीं उनके काल निर्धारण में प्रमाण के रूप में प्रस्तुत किया जाता है। कहने का तात्पर्य है कि किसी भी ग्रन्थ में तत्कालीन घटनाओं एवं स्थितियों का संकेत प्रत्यक्ष अथवा परीक्षण रूप से अवश्य ही देखा जाता है।

इक्कीसवीं शताब्दी में प्रकाशित होने वाली संस्कृत पत्र-पत्रिकाओं का अवलोकन करने पर उनमें लिखित आलोचकों से इस काल खण्ड की घटनाओं का विवरण निर्धारित रूप से विचार होता है। यह भी सत्य है कि कोई समस्या एकाएक उत्पन्न नहीं होती, अतः उसके बाद बहुत पहले से अंकुश रहते रहते हैं और दीर्घ काल के बाद उसके प्रतिफल होने पर उस पर गहराई से मनन-चिन्तन विद्वानों के बीच होने लगता है। उदाहरण के लिए जनसंख्या वृद्धि की समस्या का हम ले तो स्पष्ट है कि जिनके बच्चे कम हैं वे अपने बच्चों का पतल-पोषण एवं शिक्षा-दीक्षा की व्यवस्था सम्प्रदाय प्रकार से निर्माण करने में समर्थ होते हैं। उन्हें अधिक आर्थिक सामाजिक कठिनाइयों का सामना नहीं करना पड़ता है। जबकि बहुत बच्चों वाले अभिभावकों को बच्चों के लालन-पालन में कठिनाई व आर्थिक संकट से गुजरना पड़ता है। इस समस्या को लेकर संस्कृत साहित्य पर नजर डालों तो दृष्टिप्रण होता है कि इ. पूर्व सत्तावीं शताब्दी या उससे भी पहले के काल खण्ड में वर्तमान महापौर्ण में अपने ग्रन्थ ‘निरुक्त’ में लिखा है –

भुग्रासं: कुष्णम आपछड़े इति परिराजकाः। – निरुक्त 2.2.

अर्थात् इस समय जनकल्याण के लिए कार्यरत परिराजक सम्राट के लोग आम जनता के बीच यह प्रकाशित करते थे कि बहुत सत्तान वाले व्यक्ति कष्ट को प्राप्त करते हैं। इक्कीसवीं शताब्दी में यह समस्या सुरसा की तरह मूंह बाएं खड़ी है। इसके कारण वैज्ञानिक प्रदर्शन का लाभ लोगों तक उचित रूप में नहीं पहुँच पाता है। अतः इस समस्या के समाधान के लिए दो से अधिक बच्चे पैदा नहीं करने के लिए अनेक प्रकार के प्रत्याहार सरकार की ओर दिये जाते हैं। प्राय: संस्कृत के साथ अन्य भाषाओं में प्रकाशित होने वाली पत्रिकाओं में इस विषय को लेकर अनेक आलेख लिखी जा रहे हैं।

इसी प्रकार निर्धारित को भी मानव जीवन का एक बड़ा अभिशाप माना जाता है। हितोपदेश में धर्म के आद प्रकार बताये गए हैं – यह, अध्ययन, दान, तप, सत्य, धर्म, धार्मिक और अलोम। इनमें अध्ययन का महत्त्व सभी युगों में रहा है। आज लोगों को सहिष्णुत बनाने के लिए सरकार एवं स्वयंसेवी संस्थाओं अनेक प्रकार की योजनाओं चला रहें हैं, जिनमें आंगनवाड़ी, प्रौढ़-शिक्षा योजना, जन शिक्षा योजना, अश्रुरचन योजना आदि प्रमुख हैं। आज के युग में यह विकल्प प्रारम्भिक है, क्योंकि किसी भी जाति, वर्ग या धर्म का व्यक्ति साक्षर एवं सहिष्णु प्राप्त करने पर उठाने दिया जाता है, तो समाज के उच्च वर्ग या जाति के लोग भी उसके आगे पिछे दौड़ाने लगते हैं,
लोपामुद्रा
बात
dवषर्ों
sम्पन्नता
की
aका
ऑक्सीजन

नददर्ों
कोई

क्र्ोंदक
अपने
इस
में
करने
के
अथाात्

अथाात्
शीतलता

बहुत

के
पू
और
सम्विान
लेकर
वाला
राजनैदतक
में

अजशन्क्षत

dधमो

गिरे

राष्ट्रष्ट

gर्ा

संरक्षण

सम्बल
बल
भेवद्

g्रीष्म

ऋतु

के
पर

शीतकाले

प्रातःकाल

dके
की
ऋतु

किitे

श्यामा

बारे

वैज्ञाधनक

पीपल

रखकर

उसके

देखतें

श्र्ामा

पीपल

के
के

सन्ननननधं

इतिें

को

वेजानिक

कहतें

वो

राष्ट्रष्ट

gर्ा

संगोस्त्रिर्ों

को

परम्परा

बालो

ससन्धर

िै

समस्कर्ा

िी

गंगा

एवं

को

गंगा

वे

समाज

करती

एवं

उिघोष

किा

में

जाता

जैसे

प्रा

कावेरी

िै।

भी

दबल्कुल

आिुधनक

अदतररक्त

अपाला

थी।

भारत
c की

बढ़ी

नदियां

- गंगा,

यमुना,

弋ोदावरी,

नर्मदा,

सिन्धु,

कावेरी

आदि

के

जसतिु

कावेरी

थी।

समानता

वृक्षों

जैसे

प्रा

आपसे

साथ

परम्परा

की

कावेरी

से

रखती

होती

है।

हरी

संरक्षण

वट

एवं

उिघोष

किा

में

ज्ञात

विधा

से

की

जसतिु

निीं

पीपल

के

बारे

की

र्े

र्े

अथाात्

यमरने

वट

- 1917,

र्ि

का

समाज

श्यामा

बारे

की

कावेरी

से

रखती

होती

है।

इसी

इस

की

उदद्रोष

किया

जाता

है।

इसी

नदी

पूजा

की

प्रथा

बहुत

पुरानी

रही

है।

भारत
c की

बढ़ी

नदियां

- गंगा,

यमुना,

弋ोदावरी,

नर्मदा,

सिन्धु,

कावेरी

आदि

के

जल
c भी

इसी

ने

काटे

को

जल
c भी

इसी

ने

काटे

को

की

कावेरी

से

रखती

होती

है।

एवं

उिघोष

किा

में

ज्ञात

विधा

से

की

जसतिु

निीं

पीपल

के

बारे

की

र्े

र्े

अथाात्

यमरने

वट

- 1917,

र्ि

का

समाज

श्यामा

बारे

की

कावेरी

से

रखती

होती

है।

इसी

इस

की

उदद्रोष

किया

जाता

है।

इसी

नदी

पूजा

की

प्रथा

बहुत

पुरानी

रही

है।

भारत
c की

बढ़ी

नदियां

- गंगा,

यमुना,

弋ोदावरी,

नर्मदा,

सिन्धु,

कावेरी

आदि

के

जल
c भी

इसी

ने

काटे

को

की

कावेरी

से

रखती

होती

है।

एवं

उिघोष

किा

में

ज्ञात

विधा

से

की

जसतिु

निीं

पीपल

के

बारे

की

र्े

र्े

अथाात्

यमरने

वट

- 1917,

र्ि

का

समाज

श्यामा

बारे

की

कावेरी

से

रखती

होती

है।

इसी

इस

की

उदद्रोष

किया

जाता

है।

इसी

नदी

पूजा

की

प्रथा

बहुत

पुरानी

रही

है।

भारत
c की

बढ़ी

नदियां

- गंगा,

यमुना,

弋ोदावरी,

नर्मदा,

सिन्धु,

कावेरी

आदि

के

जल
c भी

इसी

ने

काटे

को

की

कावेरी

से

रखती

होती

है।

एवं

उिघोष

किा

में

ज्ञात

विधा

से

की

जसतिु

निीं

पीपल

के

बारे

की

र्े

र्े

अथाात्

यमरने

वट

- 1917,
मम पुत्रः श्रुहणोऽश्रो मे दुहिता विराटः
उत्तादमिि संजया पत्नी मे स्तोत्र उत्तमः।।

-ऋग्वेद- 10.159.03.

अथात् मेरे पुत्र श्रुहणोऽश्रो के वध करने में समर्थ हैं, मेरी पुत्रियाँ सजी-धजी संभावनात्मकता होती है, मेरी पितामह में सभी के स्मृत को जीतने वाली हैं तथा पति की दृष्टि में मेरा बहुत अधिक सम्मान है।

ऐसे कथन उस काल में नहीं की उत्तर अवस्था को अभिव्वत करते हैं।

उपयुक्त सुभिष्ट विषय इक्कीसवीं शताब्दी में ज्वलन समस्या के रूप में मान्य है। इन विषयों को लेकर संस्कृत पत्रिकाओं में बहुसंख्य आलेख प्रकाशित होते हैं।

अतः इक्कीसवीं शताब्दी में प्रकाशित होने वाली पत्र-पत्रिकाओं के आलेखों की ये सामान्य प्रतिलिपियाँ हैं, जो लोगों का ध्यान समस्या के समाधान की ओर आकृष्ट करती है। इनके साथ ही संस्कृत के विभिन्न विषयों - व्याकरण, साहित्य, वेद, व्योमिक आदि से सम्बंद आलेख भी इनमें प्रकाशित होते हैं। जिनमें आधुनिक दृष्टि से विवेचन की प्रतिरूप रहती है। अतः शास्त्र विषयों के राज आधुनिक विषयों के आलेखों से युक्त ये पत्रिकायें वर्तमान एवं भावी पीढ़ी द्वारा विभिन्न विषयों से परिचित करने की ओर आग्रह है।

बीसवीं शताब्दी में जिन पत्र-पत्रिकाओं का आरम्भ हुआ; उनमें बहुसंख्य पत्र-पत्रिकाओं इक्कीसवीं शताब्दी में भी प्रकाशित हो रही हैं। समय-समय पर अनेक विश्वविद्यालयों से कुछ पत्रिकाओं का प्रकाशन होता है; जिनमें विभिन्न विषयों से सम्बंद आलेख रहते हैं। ये पत्रिकायें नियमित रूप से प्रकाशित नहीं होती हैं; क्योंकि इनके प्रकाशन का कोई स्थाई अंश नहीं होता है। ग्राहित-संस्कृत-संस्थान अथवा विश्वविद्यालय-अनुदान-आयोग या अन्य ऐसी संस्थाओं से वित्तीय सहयोग प्राप्त अर्थ प्राप्त रहने पर संस्कृत विषयों, विश्वविद्यालयों अथवा संस्कृत संस्थाओं के द्वारा किसी मुख्य विषय को लेकर संगठित आयोजित की जाती है। इस अवसर पर प्राप्त अलेखों के संग्रह द्वारा पत्रिका अथवा पुस्तकों का प्रकाशन होता है। स्वतंत्र रूप से भी पत्रिकायें के प्रकाशन के लिए वित्तीय सहयोग दी जाती है; जिससे उत्साहित संस्कृत सेवी जन विद्वानों से लेख प्राप्त कर इनका प्रकाशन कराया जाता है।

इस सन्दर्भ में देखा गया है कि प्रकाशित पत्र वाकू उल्लेखनीय है। इसका आरम्भ 2001 ई. के अक्टूबर महीने में हुआ था। तब से वह नियमित रूप से निर्धारित अवधि में प्रकाशित हो रही है। इसमें स्थानीय एवं राष्ट्रीय समाचारों का संग्रह रहता है। इसका आकार छोटा होने से इसमें स्थानीय महत्त्व के विषयों का प्रकाशन सम्भव नहीं हो पाता। संस्कृत जगत के समाचारों को इसमें प्रमुखता दी जाती है।

मेरठ से प्रकाशित लोकभाषा में कुछ आलेख संस्कृत के रहते हैं तो कुछ हिंदी में भी निबद्ध होते हैं।

इसका प्रकाशन सनं 2002 ई. में आरम्भ हुआ था। इस मासिक का प्रमुख उद्देश्य लोगों को संस्कृत भाषा का ज्ञान प्रदान करना है। व्याकरण के नियमों तथा सन्धि आदि से शिक्षण इसके द्वारा किये जाते हैं। प्राचीन ग्रन्थों के कुछ प्रमुख श्लोक एवं उनके अर्थ भी इसमें सम्मिलित किये जाते हैं।

International Journal of Scientific Research in Science and Technology (www.ijsrst.com) 1918
सन् 2005 ई. में पुरी से शिशायुथा-सम्पादन-समिति के सौजन्य से शिशा-मुदा नामक त्रेमासिक पत्रिका का प्रकाशन आरम्भ हुआ। इसमें विविध संस्कृत और भाषाओं के अध्यापकों का निर्माण, शास्त्रज्ञों द्वारा आधुनिक विषयों का आलेख किया गया है।

सन् 2006-07 ई. में कश्मीर विश्वविद्यालय संस्कृत विभाग द्वारा पद्मपिंग नामक वार्षिक पत्रिका का प्रकाशन आरम्भ हुआ। इसमें राजशाही, अंग्रेजी, तथा यूनिवर्सिटी अफ इंडिया के अनुसार अध्ययन की विषयों के आलेख किये गए हैं।

देवसायरज्यम् नामक संस्कृत-संस्कृत पत्रिका का प्रकाशन वडोदरा से सन् 2007 ई. में आरम्भ हुआ। इसमें राजस्थान, अंग्रेजी, तथा सम्बंधित विषयों के आलेख किये गए हैं।

राष्ट्रपति-संस्कृत-संस्थान, मानित विश्वविद्यालय, नवदेहली से सन् 2009 ई. में संस्कृत-विषयक: का प्रकाशन आरम्भ हुआ। इसके प्रकाशन का श्रेय वर्गों के कुलपति और राजस्थान नवदेहली के विभागों को प्राप्त है। इसमें राजस्थान, अंग्रेजी, तथा प्रासाद, मानित विश्वविद्यालय, नवदेहली के राजस्थान विभागों के श्रेय से प्राप्त है।

इसी तरह कुछ और भी पत्रिकाएँ इक्कीसवीं शताब्दी में प्रकाश में आ रही हैं, जिनमें विविध विषयों से सम्बंधित आलेख रहा करते हैं। इनमें कुछ सामाजिक महत्त्व के हैं तो कुछ स्थानीय महत्त्व से सम्बंध होते हैं।

सन्दर्भ सूची -
1. संस्कृत के विद्वान् तथा पण्डित - रामचंद्र मालवीय, काशी, 1972 ई.
2. संस्कृत पत्रकारिता का इतिहास - डॉ. राम गोपाल मिश्र, दिल्ली, 1979 ई.
3. India: What can it teach us? - Maximullar
5. पत्राडूकर जी और पत्रकारिता - लक्ष्मीशंकर सरस्वती वास, इलाहाबाद, 1927 ई.
6. समाचारपत्रों का इतिहास - अन्नक वास, इलाहाबाद, 1927 ई.
7. पत्र और पत्रकार - कमलपति मिश्र, वाराणसी, 1959 ई.